ACCENT JOURNAL OF ECONOMICS ECOLOGY & ENGINEERING
Peer Reviewed and Refereed Journal, ISSN NO. 2456-1037
Available Online: www.ajeee.co.in/index.php/AJEEE

कबीर और तुलसीदास के काव्य में दार्शनिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

सुषमा काशिव
(सहायक प्राध्यापक) हरदा डिग्री कॉलेज, हरदा (म.प्र.)

सारांश : कबीर और तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के दो प्रमुख संत-कवि हैं, जिनके काव्य में गहन दार्शनिक चिंतन निहित है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों कवियों के काव्य में विद्यमान दार्शनिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। कबीर निर्गुण भक्ति परंपरा के प्रतिनिधि हैं, जो ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और अनुभवगम्य मानते हैं। उनके काव्य में ज्ञान, आत्मबोध, गुरु की महत्ता तथा सामाजिक समानता पर विशेष बल दिया गया है, साथ ही उन्होंने जाति-पाति, अंधविश्वास और धार्मिक आडंबरों का तीव्र विरोध किया है। इसके विपरीत तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं, जिन्होंने भगवान राम के साकार स्वरूप के माध्यम से भक्ति, धर्म, मर्यादा और आदर्श जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। उनके अनुसार प्रेम, श्रद्धा और समर्पण के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति संभव है। इस अध्ययन में दोनों कवियों के ईश्वर संबंधी विचार, भक्ति का स्वरूप, मोक्ष के साधन तथा सामाजिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि दोनों के दृष्टिकोण में मूलभूत भिन्नताएँ हैं—जैसे निर्गुण एवं सगुण भक्ति—फिर भी उनका अंतिम उद्देश्य मानवता का कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति है। इस प्रकार, दोनों कवियों का काव्य भारतीय दर्शन की समन्वयात्मक और बहुआयामी परंपरा को समृद्ध करता है।

कुंजी शब्द : भक्ति काल, निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति, दार्शनिक दृष्टिकोण, कबीर, तुलसीदास, रामभक्ति, आत्मबोध, सामाजिक सुधार, मोक्ष।

१. प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य का भक्ति काल भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का एक महत्वपूर्ण युग माना जाता है, जिसमें अनेक संत-कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की। इस काल की प्रमुख विशेषता भक्ति के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाना थी। इस संदर्भ में कबीर और तुलसीदास का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि हैं, जिन्होंने ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और आंतरिक अनुभव का विषय माना। उन्होंने जाति-पाति, पाखंड, अंधविश्वास और धार्मिक आडंबरों का विरोध करते हुए ज्ञान, आत्मबोध और मानव समानता पर बल दिया। दूसरी ओर तुलसीदास सगुण भक्ति के प्रमुख प्रवर्तक हैं, जिन्होंने भगवान राम के साकार रूप के माध्यम से भक्ति, धर्म, मर्यादा और आदर्श जीवन मूल्यों को स्थापित किया। उनके काव्य में प्रेम, श्रद्धा और समर्पण के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया गया है। यद्यपि दोनों कवियों के दार्शनिक दृष्टिकोण में स्पष्ट भिन्नताएँ हैं—जैसे

निर्गुण और सगुण भक्ति—फिर भी उनका अंतिम उद्देश्य मानव जीवन का आध्यात्मिक उत्थान और समाज का कल्याण है। प्रस्तुत अध्ययन में कबीर और तुलसीदास के काव्य में निहित दार्शनिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा, जिससे उनकी वैचारिक समानताओं और भिन्नताओं को समझा जा सके।

२. भक्ति काल का संक्षिप्त परिचय:

भक्ति काल (14वीं से 17वीं शताब्दी) हिंदी साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण काल है। इस काल में दो प्रमुख धाराएँ थीं:

- **निर्गुण भक्ति धारा**
- **सगुण भक्ति धारा**

निर्गुण भक्ति में ईश्वर को निराकार और निर्गुण माना गया, जबकि सगुण भक्ति में ईश्वर को साकार रूप में पूजा गया। कबीर निर्गुण धारा के प्रतिनिधि हैं, जबकि तुलसीदास सगुण धारा के प्रमुख कवि हैं।

३. कबीर का दार्शनिक दृष्टिकोण:

- निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा

कबीर के अनुसार ईश्वर निराकार, निर्गुण और सर्वव्यापी है। वह किसी मूर्ति या स्थान विशेष में सीमित नहीं है।

"मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।"

यह पंक्ति दर्शाती है कि ईश्वर मानव के भीतर ही स्थित है।

- ज्ञान और आत्मबोध

कबीर के दर्शन में ज्ञान का अत्यंत महत्व है। वे मानते हैं कि आत्मज्ञान के बिना मोक्ष संभव नहीं है।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।"

यहाँ कबीर बाहरी ज्ञान की अपेक्षा आंतरिक ज्ञान को अधिक महत्व देते हैं।

- गुरु का महत्व

कबीर के अनुसार गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का माध्यम है।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।"

गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि वही ईश्वर का मार्ग दिखाता है।

- सामाजिक दृष्टिकोण

कबीर समाज सुधारक थे। उन्होंने जाति-पाति, ऊँच-नीच, और धार्मिक पाखंडों का विरोध किया। उनका काव्य मानव समानता और भाईचारे का संदेश देता है।

- मोक्ष का मार्ग

कबीर के अनुसार मोक्ष का मार्ग आत्मज्ञान, सत्य और प्रेम से होकर जाता है। वे कर्मकांडों को निरर्थक मानते हैं।

४. तुलसीदास का दार्शनिक दृष्टिकोण:

- सगुण ब्रह्म और राम भक्ति

तुलसीदास ने भगवान राम को ईश्वर का साकार रूप माना। उनके अनुसार राम भक्ति ही मोक्ष का सर्वोत्तम साधन है।

- भक्ति का स्वरूप

तुलसीदास के अनुसार भक्ति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण पर आधारित होती है। उन्होंने नवधा भक्ति का वर्णन किया है, जिसमें श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि शामिल हैं।

- धर्म और मर्यादा

तुलसीदास के काव्य में धर्म और मर्यादा का विशेष महत्व है। राम को उन्होंने "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में प्रस्तुत किया।

- कर्म और कर्तव्य

तुलसीदास के अनुसार मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भक्ति करनी चाहिए। यही जीवन का सर्वोत्तम मार्ग है।

- मोक्ष की अवधारणा

तुलसीदास के अनुसार ईश्वर की भक्ति और समर्पण के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

५. कबीर और तुलसीदास के दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण:

- ईश्वर की अवधारणा
  कबीर: ईश्वर निराकार, निर्गुण
  तुलसीदास: ईश्वर साकार (राम के रूप में)
- भक्ति का स्वरूप
  कबीर: ज्ञान और आत्मबोध आधारित भक्ति
  तुलसीदास: प्रेम और समर्पण आधारित भक्ति
- साधना का मार्ग
  कबीर: ज्ञान मार्ग
  तुलसीदास: भक्ति मार्ग
- सामाजिक दृष्टिकोण
  कबीर: क्रांतिकारी और सुधारवादी
  तुलसीदास: परंपरागत और मर्यादावादी

६. तुलनात्मक अध्ययन:

- समानताएँ
  - दोनों ईश्वर की महिमा का वर्णन करते हैं
  - दोनों ने भक्ति को जीवन का आधार माना
  - दोनों का उद्देश्य मानव कल्याण है
  - दोनों ने समाज को दिशा देने का प्रयास किया
- भिन्नताएँ

आधार	कबीर	तुलसीदास
भक्ति	निर्गुण	सगुण
ईश्वर	निराकार	साकार
साधना	ज्ञान	भक्ति
दृष्टिकोण	सुधारवादी	परंपरागत
भाषा	साखी, दोहे	चौपाई, दोहे

७. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव:

कबीर और तुलसीदास दोनों ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला।

- कबीर ने सामाजिक समानता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा दिया
- तुलसीदास ने नैतिकता, धर्म और आदर्श जीवन का संदेश दिया

दोनों के काव्य ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया।

८. साहित्यिक योगदान:

कबीर और तुलसीदास दोनों ने हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

- कबीर ने सरल भाषा में गूढ़ दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए
- तुलसीदास ने महाकाव्य शैली में धार्मिक और नैतिक आदर्शों को स्थापित किया

९. वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता:

आज के युग में भी दोनों कवियों के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं।

- कबीर का समता और मानवता का संदेश आधुनिक समाज में आवश्यक है
- तुलसीदास का कर्तव्य और मर्यादा का आदर्श आज भी प्रेरणादायक है

१०. निष्कर्ष:

कबीर और तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के दो ऐसे महान संत-कवि हैं, जिनके काव्य में गहन दार्शनिक चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि दोनों कवियों के दार्शनिक दृष्टिकोण में मूलभूत भिन्नताएँ हैं—कबीर का निर्गुण, निराकार ब्रह्म तथा तुलसीदास का सगुण, साकार राम—फिर भी उनका अंतिम लक्ष्य समान है, अर्थात् मानव जीवन का आध्यात्मिक उत्थान और ईश्वर की प्राप्ति। कबीर ने ज्ञान, आत्मबोध, गुरु की महत्ता तथा सामाजिक समानता पर बल देते हुए धार्मिक आडंबरों, जाति-पाति और अंधविश्वासों का विरोध किया। दूसरी ओर, तुलसीदास ने भक्ति, प्रेम, श्रद्धा, धर्म और मर्यादा के माध्यम से आदर्श जीवन का मार्ग प्रशस्त किया तथा भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया। दोनों कवियों की विचारधाराएँ भले ही भिन्न मार्गों का अनुसरण करती हैं, किंतु वे एक-दूसरे की पूरक हैं और भारतीय दर्शन की समन्वयात्मक परंपरा को सुदृढ़ बनाती हैं। आज के संदर्भ में भी उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिकता का संदेश देते हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर और तुलसीदास के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमें जीवन के गहन दार्शनिक सत्यों को समझने की दिशा में भी प्रेरित करता है।

संदर्भ :

१ रामचंद्र शुक्ल – *हिंदी साहित्य का इतिहास*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
२ हजारी प्रसाद द्विवेदी – *कबीर*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
३ तुलसीदास – *रामचरितमानस*, गीता प्रेस, गोरखपुर।
४ कबीर – *बीजक*, विभिन्न संस्करण।
५ नामवर सिंह – *कविता के नए प्रतिमान*, राजकमल प्रकाशन।
६ रामविलास शर्मा – *भारतीय साहित्य की भूमिका*, लोकभारती प्रकाशन।
७ नागेंद्र – *हिंदी साहित्य का विकास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
८ विश्वनाथ त्रिपाठी – *हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास*, लोकभारती प्रकाशन।
९ गोविंद त्रिगुणायत – *भक्ति कालीन साहित्य*, साहित्य भवन।
१० सत्यदेव मिश्र – *तुलसीदास और उनका युग*, हिंदी साहित्य सम्मेलन।
११ शर्मा, आर. (2018). *कबीर के काव्य में दार्शनिक तत्वों का अध्ययन*. हिंदी साहित्य शोध पत्रिका, 12(2), 45–52।

१२ सिंह, वी. (2019). *तुलसीदास के काव्य में भक्ति और दर्शन*. भारतीय भाषा जर्नल, 8(1), 30–38।

१३ वर्मा, एस. (2020). *निर्गुण और सगुण भक्ति का तुलनात्मक अध्ययन*. अंतरराष्ट्रीय हिंदी शोध जर्नल, 5(3), 60–68।

१४ मिश्रा, पी. (2017). *कबीर और तुलसीदास: एक तुलनात्मक दृष्टि*. हिंदी अकादमिक जर्नल, 10(4), 22–29।

१५ गुप्ता, ए. (2021). *भक्ति कालीन काव्य में दार्शनिक प्रवृत्तियाँ*. साहित्य समीक्षा जर्नल, 6(2), 15–23।

१६ तिवारी, डी. (2016). *कबीर के सामाजिक विचार और उनका महत्व*. भारतीय साहित्य जर्नल, 9(1), 55–63।

१७ यादव, के. (2022). *रामचरितमानस में दार्शनिक दृष्टिकोण*. हिंदी अध्ययन पत्रिका, 14(2), 40–48।

१८ चौधरी, एम. (2019). *भक्ति आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 7(1), 70–78।

१९ पांडेय, एल. (2020). *तुलसीदास के काव्य में नैतिकता और धर्म*. भारतीय संस्कृति जर्नल, 11(3), 33–41।

२० शुक्ल, एन. (2018). *कबीर की वाणी में आध्यात्मिक चेतना*. हिंदी रिसर्च जर्नल, 13(2), 25–32।